पिंजरे का पंछी

मृदुला

यह कुछ साल पहले की सत्यकथा है। नेमी विरमगांव में एक बहुत बड़ा धनी घराना था। उसकी सन्तान में एक बेटा और एक बेटी थी। बेटी का नाम विमला और बेटे का नाम गोविन्द था। बेटी की शादी बहुत बड़े व अच्छे खानदान के पढ़े-लिखे लड़के के साथ करा दी। दो साल बहुत अच्छी तरह बीते फिर उसके पति को लकवा हो गया। लकवा एक ऐसा रोग है जिसकी दवादारू में बहुत पैसे खर्च हो जाते हैं। ससुराल में जब मर्द कमाता है तभी तक बहुओं की कद्र होती है, लेकिन जिसका मर्द बीमार हो। उसकी दवा के लिए बहुत सारा पैसा खर्च हो, तो सभी मदद करने से आंखें चुराने लगते हैं।

कठिनाइयों का दौर

यही विमला की ज़िन्दगी में हुआ। उसके पति जमनादास की बीमारी का खर्च, लड़की के कॉन्वेंट स्कूल का खर्च-अब घरवालों को बोझ लगने लगा। झगड़ा, गाली-गलौज, ताने आम बातें हो गईं। विमला घर का पूरा काम करती, फिर भी कोई उसकी मदद करने को तैयार नहीं। विमला ने घर का खर्च चलाने के लिए अपने जेवर भी बेच डाले, लेकिन तीन महीने का घर का किराया उसके सिर पर चढ़ गया। घर-मालिक घर खाली कराने के लिए झगड़ा करने लगा। अब अकेली औरत छोटी बच्ची, बीमार मर्द के साथ कैसे संघर्षों का सामना करती। विमला इतनी पढ़ी-लिखी नहीं थी कि नौकरी करके अपना घर चला सके। बड़े घर में औरत को घूंघट के अंदर क़ैद करके रखा जाता है। उनके हाथ में कोई सत्ता नहीं रहती कि बाहर जाकर कुछ काम कर सकें। घर से बाहर कदम रखते ही उस पर बुरी नज़र डालने वालों की कमी नहीं होती।

एक फैसला : एक सफलता

फिर भी विमला ने मन में ठान लिया कि वह कुछ घरेलु रोजगार ही करेगी। किसी के पास भीख के लिए हाथ नहीं फैलाएगी। उसने अपने पिताजी से एक सिलाई मशीन रक्षाबंधन के तोहफे में मांगी। मशीन पर अच्छे डिजाईन के कपड़े सीने लगी और बड़े स्टोर में जाकर बेचना शुरू किया। उसकी ईमानदारी और मेहनत रंग लाई। धीरे-धीरे उसे अच्छा काम मिलने लगा। अब उसका काम इतना बढ़ गया कि उसने दो-तीन लड़कियों को काम के लिए रख लिया। नई मशीनें खरीदकर रेडीमेड गारमेंट की फेक्ट्री लगा ली। उसका नाम उसने विमल रेडीमेड गारमेंट रखा। बहुत सारा

पैसा उसके पास हो गया। लड़की पूजा अब बड़ी हो गई थी। धनवान घराना और पढ़ी-लिखी, सुन्दर लड़की देखकर उसके विवाह के प्रस्ताव आने लगे, लेकिन विमला ने सब प्रस्ताव ठुकरा दिए। पूजा डॉक्टर बनना चाहती थी। विमला भी यही चाहती थी कि वह कुछ बन दिखाए। विमला जानती थी कि हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। (यदि पुरुष पर कोई मुश्किल आ पड़े तो औरत अपनी मेहनत और लगन से उसका मुकाबला कर सकती है। घर की जिम्मेदारी आसानी से संभाल सकती है। □